इकाई 4 रेडियो लेखन

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 ध्वनि : रेडियो लेखन का मूल आधार

4.3 रेडियो लेखन की आवश्यकता और महत्व

4.4 कार्यक्रमः जिनमें लेखन अपेक्षित है किन्तु अनिवार्य नहीं

4.5 कार्यक्रमः जिनमें लेखन अनिवार्य है

4.6 उद्घोषणाएँ, सूचनाएँ आदि भी लिखना आवश्यक

4.7 रेडियो लेखन से अपेक्षाएँ

- 4.7.1 प्रभावशाली और सम्प्रेषणीय
- 4.7.2 कार्यक्रम निर्माण और लेखनः परस्पर पूरक
- 4.7.3 विषय / चरित्र और लक्षित श्रोतावर्ग के अनुरूप भाषा

4.8 प्रसारण / प्रस्तुतीकरण तकनीक की जानकारी की आवश्यकता

4.9 प्रसारण और प्रोडक्शन तकनीक

4.10 सारांश

4.11 प्रश्न

4.0 उद्देश्य

रेडियो स्टेशन में लगे उपकरणों और इसकी कार्यप्रणाली को आप ठीक से समझ गए होंगे। प्रशिक्षण के दौरान व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में इससे आपको मदद मिलेगी। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हम एक ऐसा रेडियो कार्यक्रम निर्माता तैयार करना चाहते हैं जो न केवल कार्यक्रम तैयार और प्रस्तुत करे बल्कि स्क्रिप्ट लिखने और लिखे हुए स्क्रिप्ट की जाँच करने में भी कुशल हो। जैसा कि आप जानते हैं कि रेडियो बोलने और सुनने का माध्यम है। परंतु लगभग सभी कार्यक्रमों के स्क्रिप्ट पहले से तैयार करने होते हैं और इस स्क्रिप्ट को इस प्रकार पढ़ा जाता है कि सुनने वाले को लगे कि यह पढ़ा नहीं बोला जा रहा है। इसके लिए भाषा की भंगिमा और बोलने के लहजे का भी ज्ञान आपको होना चाहिए। इस इकाई में हम रेडियो लेखन का महत्व तो आपको बता ही रहे हैं साथ ही साथ हमारी कोशिश यह भी है कि आप समझ सकें कि रेडियो की भाषा कैसी होनी चाहिए।

4.1 प्रस्तावना

आपको रेडियो प्रोडयूसर बनना है, एक ऐसा प्रोडयूसर जिसके पास केवल तकनीकी ज्ञान न हो बल्कि उसे रेडियो की भाषा की भी जानकारी हो। जब बार-बार हम यह कह रहे हैं कि रेडियो श्रव्य माध्यम है तो निश्चित रूप से हम इस बात पर बल देना चाहते हैं कि ध्वनि रेडियो लेखन का मूलभूत आधार है। ध्वनियों के माध्यम से ही हम विभिन्न भावों को अभिव्यक्त करते हैं और श्रोताओं को कार्यक्रम से जोड़कर रखने के लिए ध्वनि

प्रभावों को भी इस्तेमाल करते हैं। असल में मनुष्य की स्मृति बहुत कमजोर होती है। कई चीजें जो अभी याद हैं थोड़ी देर बाद हम उसे भूल जाते हैं। इसलिए हमेशा अपने पास एक पैड रखना चाहिए और कार्यक्रम से संबंधित जो बातें आपके जेहन में आए उसे तुरंत नोट कर लेना चाहिए और स्क्रिप्ट लिखते समय इनका उपयोग करना चाहिए। यदि हमारे सामने लिखित स्क्रिप्ट न हो तो कई बार ऐसा हो सकता है कि हम धाराप्रवाह रूप से न बोल पाएँ। सोच-सोच कर या अटक-अटक कर बोलना रेडियो कार्यक्रम के लिए घातक हो सकता है। इसीलिए रेडियो कार्यक्रम की स्क्रिप्ट पहले से तैयार कर ली जाती है और उसे लिख लिया जाता है।

कुछ कार्यक्रम ऐसे होते हैं जिनमें लेखन की कम आवश्यकता पड़ती है जैसे रेडियो साक्षात्कार या भेंटवार्ता, रेडियो परिचर्चा या परिसंवाद, आँखों देखा हाल, गीत-संगीत के कार्यक्रम आदि। परंतु इस प्रकार के कार्यक्रमों में भी विचार-विमर्श के बिंदुओं को नोट करना लाभदायक होता है। इससे कार्यक्रम में भटकाव नहीं पैदा होता और यह जीवंत बना रहता है। इसी प्रकार आँखों देखा हाल सुनाते समय भी पूर्व तैयारी की आवश्यकता होती है। खेल का आँखों देखा हाल सुनाना हो या किसी समारोह का दृश्य वर्णित करना हो इसके बारे में पहले से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। इससे कमेंटरी करने में सुविधा भी होती है और खाली समय को भरने में भी दिक्कत नहीं होगी। लेकिन कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जिनमें लिखित स्क्रिप्ट होना अनिवार्य है जैसे रेडियो वार्ता, रेडियो नाटक, रेडियो फीचर आदि। इसमें स्क्रिप्ट के बिना काम नहीं चल सकता।

अब सवाल यह उठता है कि एक रेडियो लेखक से क्या अपेक्षाएँ की जानी चाहिए। सबसे पहले तो रेडियो लेखक को यह मालूम होना चाहिए कि कार्यक्रम क्यों और किसके लिए तैयार किया जा रहा है। जैसे यदि बच्चों के लिए कार्यक्रम है तो भाषा अलग होगी और यदि साहित्य के अध्येताओं को ध्यान में रखकर कार्यक्रम बनाया जा रहा है तो भाषा अलग होगी। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे सुनकर श्रोता बिना किसी दिक्कत के संदेश ग्रहण कर सके। रेडियो लेखक को रेडियो लेखन की तकनीकी शब्दावलियों जैसे फेड आउट, फेड इन आदि की भी जानकारी होनी चाहिए। इससे लेखन में सुविधा होती है।

4.2 ध्वनिः रेडियो लेखन का मूल आधार

रेडियो से जो भी प्रसारित होता है, वह दिखायी नहीं देता, केवल सुनाई देता है। इसलिये रेडियो अनिवार्य रूप से ध्वनि का माध्यम है। इसके घटकों में वे सारे तत्व सम्मिलित हैं जो कान से सुनाई पड़ते हैं। बोले हुये शब्द इन तत्वों में प्रमुख हैं, किंतु शब्दों के साथ ही विभिन्न भावों को अभिव्यक्त करने वाली वे ध्वनियां भी इनमें सम्मिलित हैं जो मुँह, कंठ या गले से निकलती हैं। मुँह और गले के अतिरिक्त भी अन्य अनेक साधन हैं, जिनसे ध्वनि उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए वाद्य यंत्रों को लिया जा सकता है, जिनको बजाए जाने पर संगीत उत्पन्न होता है, संगीत कान से सुनाई देता है, इसलिए यह भी मूलतः ध्वनि ही है। इसी प्रकार कई प्राकृतिक और अप्राकृतिक ध्वनियाँ हैं, जैसे—ताली बजाना, तमाचा मारना, लाठियों का टकराना, बंदूक की गोली का छूटना, तोप का चलना, कदमों की आहट, बादल का गरजना, पत्तों का सरसराना, समुद्र की लहरों का उठना-गिरना, मशीनों का चलना इत्यादि। इन सारी ध्वनियों का रेडियो में उपयोग किया जा सकता है और किया जाता है। इसलिए यह निश्चित है कि रेडियो का मूल आधार ध्वनि है।

4.3 रेडियो लेखन की आवश्यकता और महत्व

यदि रेडियो का मूल आधार ध्वनि है, तो प्रश्न उठता है कि रेडियो के लिए लेखन की आवश्यकता और उसका महत्व क्या है? आइए, आगे बढ़ने से पहले इस प्रश्न पर विचार कर लें। मनुष्य की स्मृति कमज़ोर होती है, जो कुछ बोलना है, उसे समस्त रूप से याद रख पाने और उसे धारा प्रवाह रूप से बोल पाने में मनुष्य हमेशा समर्थ नहीं होता, इसलिए जो कुछ बोलना है, उसे सोच-समझकर लिखा जाए, तो बोलने में न केवल आसानी होती है बल्कि जो कुछ बोला जा रहा है, वह भी प्रभावशाली हो जाता है और श्रोता को समझने में भी आसानी होती है। कुछ अपवादों को छोड़ दें, तो आपने यह देखा होगा कि प्रायः सभा-समाज में अनेक वक्ता बिना तैयारी के या बिना लिखे बोलने के लिए खड़े हो जाते हैं। वे जब बोलते हुए अटकने लगते हैं अपनी बात कहने के लिए शब्दों को ढूँढ़ने या याद करने लगते हैं तो उनका बोलने प्रवाह टूटने लगता है। इस तरह का बोलना सुनकर श्रोता समुदाय ऊबने लगता है, उस पर अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए ऐसा बोलना बहुत प्रभावशाली नहीं होता है। इस प्रकार के बोलने में एक ख़तरा और भी है। बोलने वाला ग़लत शब्दों का प्रयोग कर सकता है अथवा ग़लत या भ्रमपूर्ण सूचनाएँ दे सकता है, जो कि रेडियो लेखन में बिल्कुल ही मान्य नहीं हैं।

एक उदाहरण लीजिए। रेडियो पर समाचार सुनते हुए यदि आप महसूस करें कि समाचार वाचक अटकते हुए बोल रहा है या नामों का ग़लत उल्लेख कर रहा है या उसके द्वारा दी जा रही सूचनाएँ संदेहास्पद हैं, तो निश्यच ही आप ऐसे रेडियो प्रसारण को सुनना पसंद नहीं करेंगे। इसी प्रकार रेडियो से कोई स्वास्थ्य वार्ता या कहानी या नाटक या किसानों को दी जा रही सूचनाओं को सुनते हुए यदि आपको प्रवाह हीनता का बोध हो तो निश्चय ही वह प्रसारण प्रभावहीन हो जाएगा और इस प्रकार रेडियो अपने उद्देश्य में ही विफल हो जाएगा।

4.4 कार्यक्रम : जिनमें लेखन अपेक्षित है किंतु अनिवार्य नहीं

रेडियो में प्रसारण की कुछ विधाएँ ऐसी हैं जिनमें पूरे विस्तार से लिखना अनिवार्य नहीं होता। किंतु इनके लिए भी पहले से मानसिक तैयारी, विचार और यथासंभव चर्चित विषय पर मुख्य बिंदुओं को नोट कर लेना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए भेंटवार्ता या बातचीत, परिचर्चा या परिसंवाद आदि कार्यक्रमों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। भेंटवार्ता, साक्षात्कार या बातचीत सामान्य रूप से किसी व्यक्ति या फिर किसी विषय पर केंद्रित होती हैं, जबकि परिचर्चा या परिसंवाद केवल विषय पर ही केंद्रित होते हैं। रेडियो में प्रायः किसी प्रसिद्ध या चर्चित व्यक्ति को निमंत्रित किया जाता है जिससे कोई अन्य व्यक्ति उस निमंत्रित व्यक्ति के जीवन या कार्यों के बारे में सवाल पूछता है। यहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि प्रश्नकर्ता पहले ही से उस निमंत्रित व्यक्ति के बारे में यथासंभव अधिकतम जानकारी प्राप्त कर ले और संभावित प्रश्नों को नोट कर लें। परिचर्चा या परिसंवाद में भी विषय पहले ही निश्चित कर लिया जाता है। इसमें ऐसे ही लोगों को निमंत्रित किया जाता है जो उस विषय के अधिकारी विद्वान हों। कार्यक्रम के संचालक के लिए भी आवश्यक है कि वह उस विषय के सभी पहलुओं के बारे में पहले ही जानकारी एकत्रित करके उन्हें एक अलग कागज़ पर नोट कर ले, ताकि परिचर्चा का संचालन करते हुए कोई महत्वपूर्ण पक्ष छूट न जाए। उसके बनाए हुए "नोट्स" उसे संचालन करते हुए विषय के हर पक्ष का स्मरण दिलाते रहेंगे। तात्पर्य यह है कि प्रसारण की जिन विधाओं में लेखन अनिवार्य नहीं है, उनमें भी अच्छे प्रसारण के लिए किसी न किसी रूप में लेखन आवश्यक भी है और अपेक्षित भी है।

4.5 कार्यक्रमः जिनमें लेखन अनिवार्य है

रेडियो प्रसारण में कुछ विधाएँ ऐसी हैं जहाँ लेखन अनिवार्य है। लेखन के बिना एक कदम भी आगे बढ़ा नहीं जा सकता। इसका सबसे अच्छा उदाहरण नाटक है। रेडियो नाटक भी मूल रूप से नाटककार की रचना होती है। वह एक कहानी रचता है। अलग-अलग पात्रों को गढ़ता है, पात्रों के चरित्रों का विकास करता है। रेडियो नाटक में भी नाटक के सारे गुण होते हैं। नाटक मूलतः संवाद और अभिनय पर आश्रित होता है। प्राचीन काल में जब रेडियो नहीं था, नाटक की रचना मंच पर खेलने के लिए की जाती थी। आधुनिक युग में नाटक मंच पर खेले जाने के अलावा पढ़ने के लिए मुद्रित भी होने लगे। इन दोनों ही स्थितियों में नाटक में होने वाले कार्यकलाप का संकेत नाटककार संवादों के साथ कोष्ठक में निर्देशों के रूप में लिखते हैं जो मंचन में अभिनेता की सहायता करते हैं और पढ़ने में पाठक को कार्य-कलाप समझने में सहायक होते हैं। रेडियो ने भी नाटक की विधा को अपनाया किंतु रेडियो के केवल श्रवणीय होने के कारण नाटक की प्रचलित लेखन शैलियाँ इसके लिए अपर्याप्त थीं। इसलिए रेडियो नाटक में संवाद के अतिरिक्त नाटक के अन्य कार्य कलापों को भी संवाद और ध्वनियों के माध्यम से अभिव्यक्त करना आवश्यक हो गया। रेडियो नाटक की रचना करते हुए नाटककार को नाटक के ऐसे कार्य कलापों के लिए ध्वनियों और संवादों की कल्पना करनी होती है, जिनके लिए मंच पर ध्वनि या संवाद की कोई आवश्यकता नहीं होती। रेडियो नाटक में नाटककार इन ध्वनियों के लिए निर्देश लिख देता है। अभिनेता और विशेष रूप से प्रस्तुतकर्ता नाटक प्रस्तुत करते हुए सामान्यतः इन निर्देशों का पालन करके नाटक में उन ध्वनियों का प्रयोग करता है जिससे नाटक संप्रेषणीय बनता है। इसलिए जिस प्रकार मंच के लिए नाटक का लेखन आवश्यक है, उसी प्रकार रेडियो के लिए भी। यहाँ तक कि जब मंच नाटक रेडियो पर प्रस्तुत होता है तो उसका भी पुनर्लेखन आवश्यक हो जाता है।

इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है–
नीचे एक कहानी का छोटा सा अंश दिया जा रहा है। इस कहानी में एक कार्य-व्यापार दृश्य का वर्णन है जिसे रेडियो के जरिए नन्हे-मुन्ने बच्चों तक पहुँचना है।

एक छोटे से शहर में एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके पास बहुत थोड़ी-सी जमीन थी। वे उस पर खेती करके फसल को बाज़ार में बेचते थे। इससे उन्हें थोड़े-से पैसे मिलते थे।

एक बार वे दोनों दीपावली पर घर की सफाई कर रहे थे। तभी उनको लकड़ी के एक पुराने डिब्बे के पीछे से चाँदी का एक सिक्का मिला। वे दोनों बहुत खुश हुए। उन्होंने उससे अच्छे बीज और खाद खरीदी। इस बार उनके यहाँ बहुत अच्छी फसल हुई।

इस पूरे कार्य व्यापार को हम संवादों के माध्यम से ,और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं :

निर्देश - कार्यक्रम के आरंभ में निम्नलिखित ध्वनि प्रभावों का इस्तेमाल किया जाएगा।
1. पटाखों की आवाज़, 2. पटाखे छोड़ते बच्चों का शोरगुल,

किसान - भाग्यवान, हम तो छोटे किसान हैं, हम इस छोटे शहर में रहते हैं। हमारे पास थोड़ी-बहुत जमीन है, इसमें हमारा गुजारा नहीं होता। हम दीपावली क्या मनाएँ?

किसान की पत्नी - ठीक कहते हैं आप। फसल को बेचने से थोड़ी बहुत जो आमदनी होती है उससे हमें किसी तरह दो जून रोटी मिल जाती है।

किसान - अरे यह घर कितना गंदा दिख रहा है आज? यह इतना कचरा कहाँ से फैल गया?

किसान की पत्नी - अरे बच्चों की मत कहो उन्होंने ऊधम मचा रखा है। चलो मैं झाड़ू लगा देती हूँ। (झाड़ू लगाने की ध्वनि प्रभाव)

(क्षणभर के अंतराल के बाद)
किसान की पत्नी - अरे देखो तो यह क्या है!

किसान - अरे यह तो कोई लकड़ी का डिब्बा दिखाई पड़ता है।

किसान की पत्नी - जरा खोलो तो देखें इसमें क्या है?

किसान - (पुराने डिब्बे को खोलने का ध्वनि प्रभाव) अरे यह तो खुलता ही नहीं है। हाँ अब खुला। अरे इसमें तो एक चाँदी का सिक्का है।

किसान की पत्नी - चाँदी का सिक्का!

किसान - देखो दीवाली के दिन साक्षात् लक्ष्मी ने हमारे घर में कदम रखा है।

किसान की पत्नी - चलो, भगवान के सामने दिया जलाएँ।

(किसान और किसान की पत्नी मिलकर भगवान की आरती का गीत गाते हैं। धीरे-धीरे ये गीत फेड आउट होता जाता है और कार्यक्रम समाप्त होता है।)

आपने देखा कि किस प्रकार लिखित कार्य-व्यापारों और दृश्यों को श्रव्य माध्यम में तब्दील किया गया। इसमें संगीत, ध्वनि प्रभाव और संवादों का सहारा लिया गया।

इसी प्रकार रेडियो वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए भी लेखन आवश्यक है। वार्ता अनेक विषयों पर हो सकती है – शहर की सफ़ाई व्यवस्था से लेकर युवकों में बढ़ती स्वच्छंदता तक, गोबर गैस से लेकर गर्भावस्था में होने वाली बीमारियों तक और गांधीवाद से लेकर ग्राम पंचायतों के गठन तक। श्रोता वर्ग को ध्यान में रखकर कार्यक्रमों की आवश्यकता के अनुसार वार्ता के विषय का चयन किया जाता है। सामान्य रूप से वार्ता की अवधि पाँच से दस मिनट की होती है। इसी अवधि में वार्ता के विषय से प्रासंगिक सभी तथ्य वार्ता में समाहित किए जाते हैं। यदि वार्ता पहले लिखी न जाए तो रिकार्डिंग करते हुए या प्रसारण करते हुए संभव है कि किसी तथ्य पर आप अतिरिक्त बल या समय दे दें और किसी तथ्य को आप वार्ता में शामिल ही न कर पाएँ। ऐसी स्थिति में वार्ता में एक प्रकार का असंतुलन आ जाएगा, जो उस वार्ता के प्रसारण के उद्देश्यों को ही विफल कर देगा।

4.6 उद्घोषणाएँ, सूचनाएँ आदि भी लिखना आवश्यक

न केवल वार्ता, बल्कि रेडियो से प्रसारित होने वाला हर शब्द लिख लिया जाना आवश्यक है। यहाँ तक कि उद्घोषणाएँ भी पहले लिख ली जानी चाहिए। सामान्य रूप से उद्घोषणाएँ छोटी होती हैं—दो या तीन वाक्यों तक सीमित। इन्हें भी लिखा जाना आवश्यक है क्योंकि यदि बिना लिखे उद्घोषणाएँ प्रसारित की गई तो हमेशा इस बात

की संभावना बनी रहती है कि कहीं आप कोई आवश्यक बात उसमें शामिल न कर पाएँ या बोलते हुए आपकी वाक्य रचना में गलती हो जाए। लिंग और वचन सही न हों। त्रुटिपूर्ण या आधी-अधूरी वाक्य रचना श्रोता को आगे सुनने से विरत करती है। ऐसी स्थिति में आपके बोलने में प्रवाह भी नहीं रहता जिससे आपकी भाषा श्रोता को अटपटी लग सकती है। सामान्य रूप से बोलचाल में लिखित भाषा के व्याकरण का पूरी तरह से अनुपालन नहीं होता, फिर भी रेडियो से बोलते हुए व्याकरण के साथ बहुत अधिक स्वच्छंदता नहीं बरती जा सकती क्योंकि सामान्य श्रोता रेडियो से प्रसारित होने वाले भाषा रूप और शैली को मानक मानता है। कुशल और अनुभवी प्रसारणकर्ता भी कई बार बिना लिखे बोलते हुए लड़खड़ा जाते हैं क्योंकि सामान्यतः माइक्रोफ़ोन पर बोलते हुए मन में एक प्रकार का डर बना रहता है कि कहीं कुछ ग़लत न मुँह से निकल जाए। इस "माइक्रोफ़ोन फियर" या भय से मुक्ति के लिए भी जो कुछ बोलना है, उसे पहले लिख लिया जाना आवश्यक है।

अब तक हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल गया है कि रेडियो में लिखना आवश्यक क्यों है। रेडियो लेखन में उद्घोषणाओं को लिखने से लेकर वार्ता और नाटक के लेखन तक सभी कुछ शामिल है। लेखन को केवल साहित्यिक या किसी विषय के निरूपण करने तक सीमित मानने वाले लोग इस सबको "लेखन" नहीं मान सकते। किंतु रेडियो लेखन में उद्घोषणा, सूचना, मौसम का हाल से लेकर नाटक, कविता, कहानी तक सभी कुछ शामिल है। प्रसारण में बोला जाने वाला हर शब्द और साथ में हर संकेत, निर्देश और सूचना रेडियो लेखन में शामिल है।

हम नीचे रेडियो पर की जाने वाली उद्घोषणाओं का एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिसे पढ़कर आप यह समझ सकते हैं कि रेडियो पर की जाने वाली उद्घोषणाएँ किस प्रकार लिखी जाती हैं और उन्हें किस प्रकार प्रसारित किया जाता है।

नमस्कार। नमस्कार दिल्ली में आपका स्वागत है। आपके साथ हैं आपकी दोस्त शबनम। यात्रा एक ऐसी चीज़ है जिसमें हर रोज़ समय और ऊर्जा दोनों ही खर्च होती है। लेकिन अब विशेषज्ञों का कहना है कि सन् 2010 तक यात्रा का मतलब हर रोज़ की भागमभाग और धक्का-मुक्की न होकर...होगा एक आरामदेह सफर; जब आप बस में भी चाय या गरमागरम कॉफी का मज़ा ले सकेंगे। साथ ही, आफिस जाने के लिए घंटों सफर करने की बजाय लंबी से लंबी दूरी भी बस 10-15 मिनट में ही तय कर लिया करेंगे। साथ ही, टिकट सिस्टम भी ऐसा हो जाएगा कि आप एक ही टिकट को मेट्रो में, बस में या लोकल ट्रेन में इस्तेमाल कर सकेंगे। फिलहाल तो यह सब एक सपना सा लगता है लेकिन भई उम्मीद पर ही दुनिया कायम है तो हम भी यह उम्मीद करते हैं कि हमारे इस सपने को हमें 2010 तक का इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा।

वैसे जब लोकल ट्रेन या बस के साथ ही इंतज़ार की भी बात चली ही है तो हो सकता है कि आज आप को भी हो इंतज़ार किसी खास ट्रेन का; जिसमें आज आपका कोई खास मेहमान या रिश्तेदार आने वाला हो लेकिन स्टेशन जाने के लिए आप हमारी रेलवे बुलेटिन सुनने का इंतज़ार कर रहे होंगे ताकि आप यह जान पाएँ कि जिन्हें आप लेने जा रहे हैं, कहीं उनकी ट्रेन भी तो लेट नहीं। तो आइए, बता देते हैं उन्हें देर से आने वाले ट्रेन के बारे में।

पटना जंक्शन से आने वाली 2401 श्रमजीवी एक्सप्रेस नई दिल्ली पहुँचती है पाँच बजकर बीस मिनट पर, यह गाड़ी दो घंटे देरी से आ रही है। 4055 ब्रह्मपुत्र मेल गुवाहाटी से

दिल्ली पहुँचती है पांच बजकर तीस मिनट पर, ये गाड़ी छः घंटे लेट है। फरूखाबाद से आने वाली 4023 कालिंदी एक्सप्रेस दिल्ली पहुँचती है छः बजकर तीस मिनट पर, ये गाड़ी दो घंटे लेट है। 2553 वैशाली एक्सप्रेस बरौनी से नई दिल्ली पहुँचती है साढ़े छः बजे, यह गाड़ी सिर्फ आधा घंटा लेट है। मालदा टाउन से आने वाली 3483 फर्रखा एक्सप्रेस दिल्ली पहुँचती है छः बजकर पचास मिनट पर, ये गाड़ी साढ़े तीन घंटे लेट है। हावड़ा से आने वाली 2381 पूर्वा एक्सप्रेस नई दिल्ली पहुँचती है आठ बजकर दस मिनट पर, ये गाड़ी डेढ़ घंटे लेट है। 3039 हावड़ा जनता एक्सप्रेस हावड़ा से दिल्ली पहुँचती है ग्यारह बजकर पैंतीस मिनट पर, ये गाड़ी 1 घंटा देर से आ रही है और 2423 राजधानी एक्सप्रेस गुवाहाटी से नई दिल्ली पहुँचती है दस बजकर दस मिनट पर, ये गाड़ी सिर्फ आधा घंटा लेट है।

पत्र आया है गोल मार्केट दिल्ली से मिसेज निहारिका जैन का। ये लिखती हैं कि दिल्ली में डेंगू बुखार के काफी मामले सुनने में आ रहे हैं जिसका संबंध हमारे द्वारा साफ-सफाई करने में लापरवाही से भी है। इसलिए हमसे जहाँ तक हो सके घर और घर के बाहर दोनों ही जगह की सफाई पर खास ध्यान देना चाहिए और इसे और ज्यादा फैलने से रोकने में मदद करनी चाहिए। जी हाँ, दोस्तों बिल्कुल सही कहा निहारिका जी ने रिपोर्ट्स के अनुसार दिल्ली में सिर्फ एक ही दिन में डेंगू के मरीजों की संख्या 377 से बढ़कर 568 तक पहुँच गई है। इसलिए हम सभी का इस ओर खास ध्यान देना बहुत ज़रूरी हो गया है। अगर आपको तेज़ बुखार है, शरीर पर रैसेज हो रहे हैं या फिर नाक से खून बह रहा है तो फौरन हॉस्पिटल जाकर अपना चेकअप करवाएँ। इसके साथ ही इस बात का खास ख्याल रखें कि घर या घर के बाहर कहीं भी गंदगी या गंदा पानी वगैरह इकट्ठा न होने दें। दोस्तों, आज दिल्ली की आवाज़ में हमने शामिल की आवाज़ निहारिका जी की। कल ये आवाज़ आप की भी हो सकती है जिसके लिए आपको सिर्फ इतना भर करना है कि उठाना है एक पोस्टकार्ड और इस पर लिख भेजना है अपना कोई सुझाव या परेशानी तो नोट कीजिए हमारा पता। हमारा पता–दिल्ली की आवाज़, नमस्कार दिल्ली, आल इंडिया रेडियो, ए आई आर एफ एम, पोस्ट बैग 503, नई दिल्ली-110 001. वक्त है अलविदा कहने का लेकिन कोई बात नहीं आपकी दोस्त शबनम अगले गुरुवार फिर हाजिर होगी सजाने एक और महफिल नमस्कार दिल्ली की। तब तक के लिए खुश रहिएगा, अपना ख्याल रखिएगा और थोड़ा-बहुत इंतज़ार ज़रूर कीजिएगा।

4.7 रेडियो लेखन से अपेक्षाएँ

इस भाग में हम रेडियो लेखन में शामिल आवश्यक तत्वों का उल्लेख करने जा रहे हैं।

4.7.1 प्रभावशाली और सम्प्रेषणीय

रेडियो लेखन में कथ्य ही शामिल नहीं है, बल्कि कथ्य को पुष्ट करने के लिए आवश्यक ध्वनि प्रभावों के संकेत और तकनीकी निर्देश भी शामिल हैं, जो कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में सहायक होते हैं। रेडियो लेखन से सबसे प्रमुख अपेक्षा भी यही है कि वह कार्यक्रम की प्रस्तुति को अधिक से अधिक प्रभावशाली और सम्प्रेषणीय बनाने में सहायक हो।

4.7.2 कार्यक्रम निर्माण और लेखन : परस्पर पूरक

रेडियो कार्यक्रम श्रोताओं के लिए ही बनाए और प्रस्तुत किए जाते हैं। इस उद्देश्य में

सफलता तभी मिल सकती है जब कार्यक्रम श्रोता को पसंद आए। यद्यपि श्रोता को कार्यक्रम पसन्द आने या न आने में अनेक तत्व काम करते हैं जैसे वह आवाज़ जो कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही है या तकनीकी कौशल, जिसका कार्यक्रम में उपयोग किया गया है। आवाज़ अच्छी न होने पर, वाचन स्तरीय न होने पर या तकनीकी रूप से कसावट न होने पर, लेखन अच्छा होने के बावजूद कार्यक्रम पसन्द नहीं आ सकता। इसके बावजूद कार्यक्रम का मूल आधार लेखन ही है। अच्छे लेखन के बावजूद नाटक में पात्रों की उपयुक्त आवाज़ों, अभिनय में भावों के अनुकूल उतार-चढ़ाव और ध्वनि प्रभावों के उपयोग में कुशलता का अभाव रहने पर, श्रोता उस नाटक से प्रभावित नहीं होंगे। इसके विपरीत पात्रों के उपयुक्त आवाज़ों, अभिनय में भावों के अनुकूल उतार-चढ़ाव और ध्वनि प्रभावों के कुशल प्रयोग के बावजूद नाटक के मूल लेखन में कसावट, उत्सुकता आदि तत्वों का अभाव होने पर नाटक श्रोता को प्रभावित नहीं करेगा। इसलिए कहा जा सकता है कि कार्यक्रम का निर्माण या प्रस्तुति और अच्छा लेखन एक दूसरे के पूरक हैं। रेडियो लेखन से सबसे पहली अपेक्षा यही है कि वह अपने "पूरक" होने के दायित्व को पूरा करें।

4.7.3 विषय/चरित्र और लक्षित श्रोतावर्ग के अनुरूप भाषा

रेडियो लेखन में भाषा की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। नाटक में चरित्र के अनुरूप भाषा का प्रयोग होना आवश्यक है। चौराहे पर खड़े अनपढ़ व्यक्ति की भाषा और किसी पढ़े लिखे नागरिक की भाषा में अंतर होता है। यदि लेखन में इस अंतर को ध्यान में न रखकर, दोनों से एक सी भाषा बुलवाई जाये, तो रेडियो में ही नहीं, मंच पर भी, और पढ़ने में भी वह नकली लगेगी। इस प्रकार की भाषा अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल पायेगी और कथ्य को भी संप्रेषित नहीं करेगी। इसी प्रकार खेती-किसानी से संबंधित विषय पर वार्ता करते हुए ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाना आवश्यक होगा जैसी आम किसान बोलता और समझता है, जबकि प्रसाद जी की कामायनी या ग़ालिब की शायरी पर वार्ता करते हुए भाषा का रूप निश्चय ही साहित्यिक होगा। फिल्मी गानों के कार्यक्रम की भाषा और बच्चों के कार्यक्रम की भाषा में अंतर होगा। तात्पर्य यह है कि रेडियो लेखन करते हुए कार्यक्रम के अनुरूप या कार्यक्रम के विशिष्ट श्रोता वर्ग के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए। तभी कार्यक्रम अपेक्षित प्रभाव डाल पाएगा। इस प्रभाव में ही लेखन की सफलता निहित है। भाषा के संबंध में यहाँ इतनी चर्चा पर्याप्त है। रेडियो की भाषा पर विस्तार से विचार करने के लिए अगली इकाई निर्धारित है।

4.8 प्रसारण/प्रस्तुतीकरण तकनीक की जानकारी की आवश्यकता

अब तक हमने रेडियो में लेखन की आवश्यकता और उससे की जाने वाली अपेक्षाओं पर विचार किया। एक ओर कार्यक्रम की प्रस्तुति और दूसरी और लेखन; दोनों मिलकर ही कार्यक्रम का समग्र निर्माण करते हैं। दोनों पक्ष एक दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों घटकों में एक के भी कमज़ोर रहने पर कार्यक्रम अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल पाएगा। लेखन नींव के समान है जिस पर कार्यक्रम का भवन खड़ा किया जाता है। जिस प्रकार नींव डालते समय ही यह विचार किया जाता है कि उस पर किस प्रकार के भवन का निर्माण किया जाएगा, किस सामग्री का उपयोग किया जाएगा, उसका आकार-प्रकार क्या होगा, उसी तरह लेखन करते हुए यह विचार कर लेना आवश्यक है कि कार्यक्रम की विधा क्या होगी, उसमें किन तथ्यों का समावेश करना है, वह किस श्रोता वर्ग के लिए है, उसकी भाषा क्या होगी, और उसको प्रस्तुत कैसे किया जाएगा। इन सभी पक्षों पर हम अब तक विचार कर चुके हैं।

रेडियो कार्यक्रम में प्रस्तुति का भी विशेष महत्व है। प्रस्तुति मूल रूप से प्रस्तुतकर्ता का कर्तव्य है, लेखक का नहीं। फिर भी प्रस्तुति की सामान्य जानकारी लेखक को अवश्य होनी चाहिए। तभी वह अपने लेखन में प्रस्तुतकर्ता के लिए उपयुक्त दिशा-निर्देश दे सकता है। इसकी आवश्यकता विशेष रूप से रूपक, नाटक और ऐसे अन्य कार्यक्रम में पड़ती है। इसलिए रेडियो लेखक को प्रस्तुति से संबंधित तकनीकी की सामान्य जानकारी होना चाहिए।

कार्यक्रम का निर्माण और प्रसारण मशीनों द्वारा किया जाता है। कार्यक्रम निर्माता या प्रस्तुतकर्ता जिन मशीनों का उपयोग करता है, वे हैं टेप रिकार्डर्स, सीडी प्लेयर, प्लैबैक मशीनें, टर्न टेबल, कंसोल, माइक्रोफ़ोन इत्यादि। इन मशीनों की यांत्रिक रूप से जानकारी कार्यक्रम निर्माता या प्रस्तुतकर्ता से अपेक्षित नहीं है, किंतु यह मशीनें कैसे चलाई जाती हैं, यह जानना कार्यक्रम निर्माता और प्रस्तुतकर्ता के लिए अनिवार्य है और लेखक के लिए भी आवश्यक है। इन मशीनों के उपयोग करने के तरीकों से कार्यक्रम में अलग-अलग प्रकार के प्रभाव उत्पन्न किए जा सकते हैं। इन तरीकों या प्रसारण तकनीकों को रेडियो में अलग-अलग नाम दिए गए हैं। इनमें से कुछ प्रमुख तकनीकों पर अब हम चर्चा करेंगे।

4.9 प्रसारण और प्रोडक्शन तकनीक

फेड आउट

रेडियो से जो कुछ प्रसारित हो रहा है, उसे सुनते हुए यदि अचानक कुछ और सुनाई देने लगे तो श्रोता चौंक जाता है, उसे एक आघात जैसा लगता है। यह कार्यक्रम की प्रभावशीलता को कम करता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आप एक गीत सुन रहे हैं और अचानक वह गीत टूट जाए और कोई दूसरा गीत सुनाई देने लगे, वह श्रोता को एक आघात जैसा लगेगा। वास्तव में यह प्रसारण एक कंसोल के माध्यम से प्रसारित होता है। कंसोल का संबंध प्लेबैक मशीन (जिस पर टेप चलाया जाता है) या टर्न टेबल (जिस पर रिकार्ड बजाया जाता है) से होता है। कंसोल पर हर टर्न टेबल और हर प्लेबैक मशीन के लिए एक-एक फेडर होता है। फ़ेडर जितना ऊंचा करते जाते हैं, आवाज़ उतनी बढ़ती जाती है। अब होता यह है कि समझदार प्रस्तुतकर्ता, प्रसारित हो रहे गीत की समाप्ति पर उसी गीत के फेडर को नीचे लाने लगता है, जिससे श्रोता को यह लगता है कि गीत नेपथ्य में चला गया। इसी प्रक्रिया को फेड आउट कहते हैं।

फेड इन

गीत के पूरी तरह फेड आउट होने पर प्रस्तुतकर्ता को जो कुछ कहना हो, वह कहता है, जिसके लिए अन्य फेडर का उपयोग करता है। अब वह दूसरा गीत आरंभ करते ही कंसोल पर उससे संबंधित फेडर को धीरे-धीरे ऊपर उठाना शुरू करता है, जिससे श्रोता के कान पर किसी प्रकार का प्रहार नहीं होता, बल्कि गीत नेपथ्य से उभरता हुआ लगता है। इसे ही फेड इन कहते हैं। यह सारी प्रक्रिया कुछ सेकेंड में ही पूरी हो जाती है।

क्रॉस फेड

फेड आउट और फेड इन के बीच जब प्रस्तुतकर्ता कुछ बोलता नहीं और एक गीत फेड आउट करते हुए जब दूसरा गीत फेड इन किया जाता है, तो वह प्रक्रिया क्रॉस फेड कहलाती है।

फेड आउट, फेड इन और क्रॉस फेड की तकनीक का प्रयोग केवल गीतों की प्रस्तुति में ही नहीं, बल्कि रूपक, नाटक आदि में काफी किया जाता है। जैसे–किसी नाटक में यह बताना है कि कोई पात्र अपनी बात कहते हुए दूर जा रहा है। ऐसी स्थिति में वह पात्र माइक्रोफ़ोन पर संवाद बोलते हुए दूर होता जाता है। इस तरह से रिकार्ड किया गया संवाद जब चलाया जाएगा तो श्रोता को ऐसा लगेगा कि वह पात्र बोलते हुए दूर जा रहा है। इसे भी फेड आउट कहा जाएगा। इसके विपरीत जब कोई पात्र दूर से बोलते हुए नजदीक आता है, तो वह फेड इन कहलाएगा। इन प्रक्रियाओं के कुशल प्रयोग से ध्वनि प्रभावों में चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है।

सुपर इम्पोज़िंग

गीत प्रस्तुत करते हुए गीत के बीच में संगीत के टुकड़े की ध्वनि कंसोल पर फेडर की सहायता से हल्की कर दी जाती है और उस पर प्रस्तुतकर्ता कुछ कहता है, तो प्रस्तुतकर्ता का कथन भी सुनाई देता है और उसकी पृष्ठभूमि में संगीत भी सुनाई देता है, यानी संगीत की पृष्ठभूमि में प्रस्तुतकर्ता का कथन सुनाई देता है। इसी प्रक्रिया को **सुपर इम्पोज़िंग** कहते हैं। प्रायः नाटकों और रूपकों में इस तकनीक का काफी प्रयोग किया जाता है। संवादों की पृष्ठभूमि में ध्वनि प्रभाव या संवादों के अनुकूल संगीत इसी प्रक्रिया के प्रयोग से सुनाई देते हैं।

अंडर

सुपर इम्पोज़िंग प्रक्रिया का ही दूसरा पक्ष **अंडर** कहलाता है। मान लीजिए किसी नाटक में युद्ध का ध्वनि प्रभाव चल रहा है। अब उसी युद्ध की पृष्ठभूमि में कुछ संवाद देते हैं। ऐसी स्थिति में युद्ध के ध्वनि प्रभाव को थोड़ा हल्का कर देंगे और संवाद को पूरे वाल्यूम पर रिकॉर्ड कर लेंगे। सुनते समय ऐसा लगेगा कि युद्ध के मैदान में, युद्ध के चलते हुए पात्र बात कर रहे हैं। संवाद समाप्त होने पर युद्ध के ध्वनि प्रभाव का वॉल्यूम फिर से बढ़ा दिया जाएगा, जिससे यह लगेगा कि युद्ध अभी भी चल रहा है। यहाँ ध्वनि प्रभाव को संवाद की पृष्ठभूमि में ले जाने की प्रक्रिया को **अंडर** करना कहेंगे और ध्वनि प्रभाव पर संवाद को उभारने की प्रक्रिया को **सुपर इम्पोज़** करना कहेंगे।

प्रसारण के काम में आने वाली मशीनें वाद्य यंत्रों के समान होती हैं जिनका संचालन सीख लेना ही पर्याप्त नहीं होता। अभ्यास और अनुभव से इनके प्रयोग में कुशलता आती है। इनके द्वारा प्रसारण में नित्य नए प्रयोग किए जा सकते हैं। किसी भी प्रस्तुतकर्ता के लिए इन मशीनों की क्षमताओं और उनके प्रयोग की संभावनाओं को पहचानना आवश्यक है। रेडियो के लिए लिखने वाले लेखक को भी इन मशीनों और उनके संचालन के बारे में जानकारी लेखन में सहायक ही होती है।

4.10 सारांश

आपने इस इकाई में रेडियो लेखन के आधारभूत तत्वों की जानकारी प्राप्त की। रेडियो उच्चरित शब्दों और भाषा के माध्यम से श्रोताओं तक पहुँचता है। अतः इसमें शब्दों के उच्चारण और भाषा के गठन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके लिए ज़रूरी है कि रेडियो पर जो भी प्रसारित किया जाए उसे पहले लिख लिया जाए। रेडियो के लिए लिखते समय समय इस माध्यम, कार्यक्रम और श्रोता वर्ग की जानकारी आवश्यक होती है। इसे ध्यान में रखते हुए रेडियो लेखक को प्रसारण तकनीक मसलन फेड आउट, फेड इन, सुपर इम्पोज़ आदि तकनीकों की भी जानकारी होनी चाहिए।

4.11 प्रश्न

1. रेडियो साक्षात्कार या भेंटवार्ता के आलेख के लिए आप क्या-क्या तैयारी करना चाहेंगे? इस पूर्व तैयारी की पूरी प्रक्रिया का वर्णन करें।
2. रेडियो नाटक के लिए आलेख करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। सोदाहरण चर्चा करें।
3. रेडियो वार्ता के लिए कुछ विषयों का चुनाव करें और उनमें से एक वार्ता का आरंभिक अंश लिखें।